कृषक स्तर पर लाख उत्पादन की समस्यायें

जयदेव महतो

पुटीडीह, पुरूलिया, पश्चिम बंगाल

हमारे पश्चिम बंगाल में लाख की खेती मुख्य रूप से पुरूलिया, बांकुरा और मिदनापुर जिले में होती है । लगभग 20 वर्ष पहले इन क्षेत्रों में पूरी अप्रैल.मई माह में गर्मी के बावजूद किसान काफी बड़े स्तर पर रास्ते भर कटाई की गयी फसल ले जाते दिखायी पड़ते थे । महिलायें पूरे दिनभर लाख की छिलाई करती थीं फिर भी पूरी लाख की छिलाई समाप्त नहीं हो पाती थी । लाख के पैसे से कई घरों की शादी, बच्चों की पढ़ाई, कपड़ा, घर बनवाना आदि कार्य हो जाता था। लेकिन समय बदल गया है । जमीन में पानी का स्तर बहुत नीचे चला गया । तापमान काफी उपर तक पंहुच जाता है, पानी नहीं बरस रहा है, पीने का पानी भी मुश्किल से मिल रहा है, गरीबी के कारण लाख बीहन की खरीदारी में किसान भी सक्षम नहीं रह गया । ऐसे में लाख लगाना भी लगभग असम्भव हो गया है । अपने अनुभव से कह सकते हैं कि लाख खेती में निम्नलिखित समस्यायें आती हैं ।

- लगभग पिछले 6 साल से रंगीनी लाख फरवरी.मार्च माह में मर जाती है ।
- बची फसल हाल के कुछ वर्षो में गर्मी मे अधिक तापमान से मर जाती है
- उसके पश्चात जो फसल बचती है वह मानसून समय से न आने के कारण या देर से आने के कारण मरने का खतरा बना रहता है।
- बरसात की फसल में शत्रुकीट का आक्रमण बहुत अधिक बना रहता है ।
- कुसमी फसल पर क्राईसोपा नामक खतरनाक परभक्षी का आक्रमण सामान्य बात है
- मानसून देर से आने पर बीहन लाख से शिशु कीट बहुत कम निकलना
- शत्रु कीटों से लाख फसल का नुकसान ।

हमें इस बात से खुशी भी है कि भा.प्रा.रा.गों.सं. द्वारा कई नई तकनीक किसानों के लिये विकसित की गयी है जैसे बेर पर कुसमी लाख की खेती, बागान लगाकर सेमियालता पर कुसमी लाख की खेती, रंगीनी एवं कुसमी दोनों फसलों हेतु शत्रु कीट का प्रबंधन इत्यादि ।

आवश्यकता अब इस बात की है कि कोई ऐसा लाख कीट विकसित हो जो कम पानी में या सूखे की स्थिती में उत्पादन कर सके । ऐसे लाख पोषक वृक्ष की आवश्यकता है जिस पर लाख कीट सूखे की स्थिती में भी जीवित रहे । समय बदल गया लेकिन समयानुसार इस कार्य के लिये वैज्ञानिक इस दिशा में भी यदि कार्य करेगें तो किसानों का भी भला होगा । मै पुरूलिया के झालदा प्रखडं का निवासी हूँ, मेरे गांव में पलास, बेर और कुसुम तीनों प्रकार के पोषक वृक्ष पर्याप्त संख्या में हैं तथा संस्थान के कई वैज्ञानिकों ने पिछले 10 वर्ष से हमारे गांव में अपना शोध का कार्य पूरा किया है और अभी भी बहुत कुछ कर रहे है हम चाहते हैं हम किसानों के खेत, जंगल में अधिक से अधिक शोध कार्य हो । मेरे अपने ही 11 कुसुम, 52 बेर, 2500 पलास के पेड़ है यदि संस्थान चाहे तो इसे शोध के लिये ले सकता है । हमारा यह भी अनुरोध है कि यदि संस्थान अपनी एक ईकाई पुरूलिया जिलें में खोले तो इसका लाभ पूरे पश्चिम बंगाल के किसानों को मिलेगा ।